P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

फ्यूज़न संगीत

सारांश

फ्यूज़न का सामान्य अर्थ मेल या मिलान है, परन्तु इस शब्द के अर्थ के समान फ्यूज़न इतना सरल नहीं है और न ही हर कोई ऐसा प्रयोग कर सकता है, न ही करना चाहिए। 'फ्यूज़न' संगीत के नाम पर आए दिन ऐसे प्रयोग हो रहे हैं कि फ्यूज़न निरर्थक सा प्रतीत होने लगा है। फ्यूज़न के प्रयोग को सफल बनाने के लिए इनके बीच सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है। फ्यूज़न के प्रयोग के माध्यम से लोगों को एक दूसरे की संस्कृतियों को जानने का अवसर प्राप्त हो रहा है और शास्त्रीय संगीत का प्रचार विदेशों में भी बढ़ रहा है। संस्कृतियों का आदान. प्रदान तो बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है, परन्तु हमारी प्राचीन व समृद्ध परम्परा का अस्तित्व खतरे में नहीं है ।

मुख्य शब्द : फ्यूज़न, वैश्वीकरण।

आलाप देवड़ा
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

फ्यूज़न शैली संगीत की ऐसी शैली है, जिसमें दो या दो से अधिक शैलियों का संयोग किया जाता है । फ्यूज़न शैली का मूल लक्षण गति, लय और कभी. कभी लम्बी सांगीतिक यात्राओं जो की तेज़ गति और शैली विद्यमान होती है। फ्यूज़न संगीत की रचनाएँ विभिन्न सांगीतिक शैलियों से प्रभावित हैं। इसके अनेक कारण हैं वस्तुतः इसका मूल कारण हैं ज़्यादातर शैलियों का एक–दूसरे से मेल होना। फ्यूज़न के उदाहरण तो अनेक हैं बल्कि, यदि कहा जाए कि सृष्टि की कल्पना भी हम 'फ्यूज़न' के बिना नहीं कर सकते, तो यह अतिशयोक्ति न होगी। जब इस प्रकार से निर्मित शैली अलग से पहचानी जाती है, तो दोनों शैलियों के कुछ गुणों को ग्रहण करने के साथ–साथ, कुछ ऐसे भी तत्व होते हैं जो संगीतज्ञों द्वारा ग्रहण नहीं किए जाते या छूट जाते हैं। फ्यूज़न संगीत को ''क्रॉस ओवर म्यूज़िक'' Contemporary Music तथा World Fusion Music भी कहा गया है ।

फ्यूज़न का अर्थ

दो या दो से अधिक संगीत शैलियों को कलात्मक ढंग से पूरा घुलाया जाए, फ्यूज़ किया जाए, तो उससे एक नए संगीत का नया रूप सामने आएगा, वह 'फ्यूज़न' कहा जाएगा ।

Fusion का यदि शाब्दिक अर्थ लें तो 'Fusion' शब्द 'Fuse' शब्द से बना है । Fuse में ही क्रिया जोड़कर Fusion शब्द बना है । Fuse शब्द का अर्थ है Combine to form a hole अर्थात् दो वस्तुओं को जोड़कर एक वास्तु बनाना, अतः Fusion का अर्थ हुआ The act of fusing अर्थात् जोड़ने की क्रिया।[1]

"व्यास्टर शब्द कोश के अनुसार फ्यूज़न अर्थ है to melt with blend by melting. इसके अतिरिक्त The act or an instant of fusing or melting-" [2]

इसमें एक बात पर ध्यान देना आवश्यक होगा कि, घुलाए (Fuse) जाने में ऐसी विशेषता होनी चाहिए, जो दो संगीत प्रकार प्रयोग में लाये गए हैं, उन दोनों की अपनी पहचान मिटकर, आपस में ऐसे घुल–मिल जाए, कि दोनों संगीत प्रकार की विशेषता भी उभर कर आये और एक नये अंदाज़ में सामने आये तथा उसमें अपना एक अनोखापन भी नज़र आये। इस प्रकार निर्मित संगीत 'फ्यूज़न संगीत' होगा।

वैसे तो मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि दो वस्तुओं के मेल को 'फ्यूज़न' कहेंगे अर्थात् फ्यूज़न को हिन्दी में मेल या मिलन कह सकते हैं। Fusion को कुछ एक उदाहरणों से समझते है । जैसे दो रसायनिक पदार्थों को आपसे में मिलाने पर एक तीसरे प्रकार का रसायन तैयार हो जाता है। यह तीसरा प्रकार का जो रसायन तैयार हुआ यह 'फ्यूज़न' है । दो रंगों को मिलाने पर एक तीसरा रंग तैयार हो जाता है। जैसे, लाल + सफ़ेद = गुलाबी अथवा लाल + पीला = नारंगी इत्यादि ।

किसी एक देश की संस्कृति का संगीत जब दूसरे देशों की संस्कृतियों के साथ मिलता है तो एक नया संगीत प्रकार बनता है। फ्यूज़न से अभिप्रायः

है 'किसी एक प्रकार के संगीत का दूसरे प्रकार के संगीत में घुल जाना, 'फ्यूज़' हो जाना ।'

"संगीत के इतिहास का अगर हम अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि दुनिया का हर संगीतकार अपने संगीत में कुछ विविधता या नयापन लाने का प्रयास करता है । अलग–अलग प्रान्तों के व अलग– अलग देशों के संगीत प्रकारों को जिन्होंने भी सुना है उन्होंने अपनी पसंद के प्रकार प्रस्तुत किए हैं । उनमें से कई संगीत प्रकार काल प्रवाह में लुप्त हो गए । कई प्रकार थोड़े समय तक प्रचलित रहे और कई संगीत प्रकारों ने स्थिरता प्राप्त की और भविष्य के मुख्य संगीत प्रकार बन गए ।"[3]

फ्यूज़न के प्रयोग के माध्यम से लोगों को एक दूसरे की संस्कृतियों को जानने का अवसर प्राप्त हो रहा है और शास्त्रीय संगीत का प्रचार विदेशों में भी बढ़ रहा है। संस्कृतियों का आदान–प्रदान तो बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है।

फ्यूज़न के माध्यम से कलाकारों द्वारा नवीन प्रयास करके उसमें एक नवीनता का प्रयास किया जा रहा है। किसी भी कला की प्रगति के लिए उसमें थोड़ा परिवर्तन तथा नवीन प्रयोग अनिवार्य रहते हैं जिससे उस क्षेत्र का विकास होता रहे। 'फ्यूजन' संगीत अधिक रुचिकर, नवीन प्रयोगों के साथ, वैचित्रयता को लिये हुए है, जिसके कारण लोगों में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।

किसी भी दो विधाओं के मिश्रण से नवीनता आती है। उसे हम 'फ्यूज़न' कह सकते है । संगीत में गायन–वादन के साथ–साथ नृत्य प्रदर्शन के क्षेत्र में भी फ्यूज़न के नाम से कुछ नया कर देखने के लिए कलाकार बहुत ही उत्सुक हैं और मंच पर नए प्रयोग यदा–कदा सामने आ रहे हैं उनमें ज़्यादातर दो अलग– अलग नृत्य शैलियों की फ्यूज़न प्रस्तुतियों में लयात्मक गतियों को जोड़ने को आधार बनाया गया । आज फ्यूज़न का प्रयोग संगीत के अलावा भी अन्य कई क्षेत्रों में हो रहा है, जैसे फैशन डिजाइनिंग, आर्किटेक्चर, एग्रीकल्चर, पाक–कला, ज्वैलरी डिजाइनिंग आदि क्षेत्रों में विभिन्न परम्पराओं और शैलियों का मेल करके नवीन प्रयोग किए जा रहे हैं। संगीत के क्षेत्र में विद्वानों ने मिलकर ऐसे अनेक प्रयोग किए हैं और कर रहे हैं। जैसे, दक्षिणी तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, लोक व शास्त्रीय संगीत, पाश्चात्य व भारतीय शास्त्रीय संगीत आदि।

वैश्वीकरण का प्रभाव आज सभी ओर दृष्टिगोचर है तो संगीत कैसे अछूता रह सकता है । कहीं न कहीं फ्यूज़न भी वैश्वीकरण का ही एक परिणाम है । "आज हमारी भारतीय शास्त्रीय गायन परम्परा में वैश्वीकरण का अत्यंत व्यापक प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है । इस वैश्वीकरण ने एक ओर कई नवीन संभावनाओं के द्वार खोलें हैं तो वहीं दूसरी ओर कई समस्याओं को भी हमारे समक्ष ला खड़ा किया है ।"[4]

आज की युवा पीढ़ी फ्यूज़न संगीत को बहुत अधिक पसंद करती है और बहुत से कलाकार भी इसका प्रयोग कर रहे हैं तथा विश्वभर में इसका प्रचार–प्रसार भी हो रहा है ।

पंडित विश्व मोहन भट्ट के अनुसार "भारतीय संगीत ऐसे महासागर की तरह है जिसके रहस्य को मालूम कर पाना कठिन है । फ्यूज़न की कोई परिभाषा नहीं हैं परन्तु इतना अवश्य कह सकते हैं कि यह भी क्रियात्मक संगीत का एक अंग है और इसमें प्रयोग की कई संभावनाएं हैं और यह आज़ाद है, यह किसी भी प्रकार की सीमाओं में बंधा नहीं है ।"[5] पं. विजयशंकर मिश्र, अंर्तनाद, सुर और साज, पृ. 233

अक्सर लोगों में भ्रांति होती है कि पाश्चात्य और भारतीय वाद्यों को मिलाकर बजा दिया तो मानों हो गया Fusion। पाश्चात्य गिटार या वायलिन के साथ सितार बजा दो या सारंगी बजा दो तो, हो गया फ्यूज़न या पाश्चात्य ड्रम के साथ तबला या पखावज बजा दो, बस हो गया फ्यूज़न।

क्या वाकई फ्यूज़न इतना ही सरल है ?

जवाब होगा – नहीं।

आज के समय में शास्त्रीय संगीत जो अपने मूल रूप में आम लोगों को संभवतः उतना रुचिकर न लगे, परंतु विवेकपूर्ण अन्य संगीत के मिश्रण या फ्यूज़न से शास्त्रीय संगीत को भी आम जनता में लोकप्रिय बनाया जा सकता है । इसका अर्थ यह नहीं कि ऐसे प्रयोग से शास्त्रीय संगीत के मूल तत्वों का ह्रास होगा या शास्त्रीय संगीत के मूल रूप को कोई क्षति होगी ।

"संगीत चाहे पूर्व का हो या पश्चिम का दोनों का आधार स्वर और लय है । किन्तु हमारा भारतीय संगीत परम्परागत होने के कारण भी इसमें समयानुसार परिवर्तन होते रहे और उनको स्वीकारा भी गया । फ्यूज़न का अगर प्रयोग इसमें हो भी रहा है तो इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि फ्यूज़न का प्रयोग करते समय राग संगीत के नियमों का उल्लंघन ना किया जाये तो फ्यूज़न शास्त्रीय संगीत के लिए लाभप्रद होगा।"[6]

उद्देश्य

'फ्यूज़न' के माध्यम से किसी भी वस्तु में रोचकता लाई जा सकती है और यदि कोई वस्तु अपने मूल रूप में लोगों को रुचिकर न लगे तो उसमें लोगों की रुचि के हिसाब से थोड़ा बहुत फेर–बदल करके उसे रुचिकर बनाने में कोई हर्ज नहीं हैं।

"हिन्दुस्तानी संगीत का ढांचा कोई ऐसी इमारत की तरह नहीं है, जो एक बार निर्मित हो गयी सो हो गयी। संगीत हमेशा से ही परिवर्तनशील रहा है तथा इसमें निरन्तर परिवर्तन अपेक्षित है ।"[7]

सुझाव

फ्यूज़न का प्रयोग करने के लिए सर्वप्रथम जिन दो सांगीतिक क्षेत्रों और वाद्यों या शैलियों पर प्रयोग किया जा रहा है, उन दोनों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को दोनों क्षेत्रों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए साथ ही साथ दोनों में से एक शैली या क्षेत्र में उसे पूर्ण दक्षता प्राप्त होना चाहिए । फिर यह प्रयोग इस प्रकार विवेक और चातुर्य के साथ होना चाहिए, जिससे दोनों में से किसी एक शैली का आधिक्य ना हो और ना ही दूसरी शैली के प्रभाव में छिप ही जाये। दोनों शैलियों का जब तक समान रूप से दृष्टिगोचर या श्रव्यगोचन नहीं होगा, उसका प्रभाव अधूरा ही रहेगा। इसके अतिरिक्त ऐसा प्रयोग रुचिकर भी होना चाहिए।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य फ्यूजन संगीत का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

कला की दुनिया का कोई भी प्रतिभावन कलाकार अपनी कला में नवीनता और विविधता लाने के लिए प्रयत्नशील रहता ही है। संगीत कला के क्षेत्र में प्रवीण कलाकारों ने अलग–अलग देश और प्रांत के संगीत का भी अध्ययन किया । फिर अपनी पसंद अनुसार किन्हीं दो या दो से अधिक प्रकारों के आधार पर नवीन प्रयोगों को अंजाम दिया। 'फ्यूज़न संगीत' उन्हीं प्रयोगों में से एक प्रकार है ।

परन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट है कि फ्यूज़न संगीत का प्रयोग केवल प्रवीण, कला चातुर्य से परिपूर्ण और अपने–अपने क्षेत्र में सिद्धहस्त विद्वान ही कर सकते हैं, हर कोई नहीं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संगीत कला विहार, अगस्त, पृ. 35 , अखिल भारतीय गन्धर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई, 2005*
2. *संगीत कला विहार, अगस्त, पृ. 35, 2005*
3. *डॉ. शालिनी ठाकुर, रागदारी संगीत और फ्यूज़न संगीत एक प्रयोगधर्मिता, पृ. 53, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013*
4. *डॉ. कु. आकांक्षी भारतीय संगीत और वैश्विकरण पृ. 32, कनिष्का पब्लिशर्स, 2011*
5. *विजयशंकर मिश्र, अन्तर्नाद, सुर और साज, पृ0 233*
6. *डॉ. शालिनी ठाकुर रागदारी संगीत और फ्यूज़न संगीत पृ. 177, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013*
7. *कु. निशा श्रीवास्तव राग संगीत की उत्पत्ति एवं विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन पृ. 11, शोध प्रबन्ध, 1998*